13 बीघा से कमाई 15 लाख

गुलाब की खेती से प्रति बीघा आय सवा लाख

देवीलाल
बोडा खेडा, चित्तौडग़ढ़, राजस्थान
मो.: 9001258482

गांव से युवाओं का पलायन राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है। सरकार कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रही है। ताकि, ग्रामीण युवा गांव में ही स्वरोजगार स्थापित कर सके। लेकिन, इससे मर्ज ठीक नहीं होने वाला। पढ़े-लिखे ग्रामीण युवाओं को किसान देवी सिंह जैसी सोच को अपनाना जरूरी है। जिन्होंने तीन वर्ष में ही नौकरी से तौबा कर ली। नौकरी के दौरान मिले अनुभव को अपने खेत में उतारा। गुलाब की खेती से जुड़े। अब 15 लाख रूपये साल की औसत आमदनी घर बैठे ले रहे है।

खेती में क्या रखा है, चलो शहर चलें। लेकिन, कुछ ऐसे पढ़े-लिखे युवा भी है जो इस सोच के इतर जाकर खेती में अपनी पहचान बना रहे है। ऐसे ही युवा किसान है देवीलाल। जो, 22 हजार रूपये खर्च कर एक बीघा क्षेत्र से एक से सवा लाख रूपए की आय ले रहा है। अब आप सोच रहे होंगे कि परम्परागत फसल के खर्च में इतनी आय कैसे संभव है। यह मुनासिब हुआ है गुलाब की खेती से। 5 बीघा क्षेत्र में गुलाब की खेती करने वाला यह किसान अब 13 बीघा क्षेत्र में इस फसल का उत्पादन कर प्रति बीघा एक से सवा लाख रूपए की आय अर्जित कर रहा है। गुलाब की गुणवत्ता को देखते हुये पुष्कर के व्यापारी किसान के घर से गुलाब की खरीद कर रहे है। इस कारण विपणन की समस्या भी इस किसान के सामने नहीं है। गौरतलब है कि यह किसान महज तीन वर्ष पूर्व खेती से जुड़ा है। स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त इस किसान ने जगह-जगह से खेती-बाड़ी की जानकारी जुटाने के लिए एक निजी बीज प्रदाता कंपनी में तीन वर्ष तक नौकरी की। क्षेत्रीय किसानों द्वारा अपनाई जा रही उन्नत विधियों को जानने-समझने के बाद नौकरी छोड़कर खेती से जुड़ गया। अब लाखों रूपए की आय ले रहा है। किसान का कहना है कि गुलाब की खेती से पूर्व 35 बीघा जमीन से इतनी आय नहीं होती थी। सारा खर्च निकालने के बाद ढाई से तीन लाख रूपये सालाना की आय होती थी। इतना मुनाफा भी सब्जी उत्पादन

से संभव हो पाता था। लेकिन, गुलाब की खेती से मिली आय को देखते हुए अब सब्जी का उत्पादन लेना बंद कर दिया है। परम्परागत फसल में सोयाबीन, उड़द, मूंग, मूंगफली, गेहूँ और सरसों का उत्पादन लेता हूँ।

ऐसे महकती है आय

गुलाब से आय को महकाने का गणित कुछ अलग है। किसान के अनुसार एक माह में पेड़ से दो तुड़ाई होती है। एक बीघा क्षेत्र में शुरूआती आय 60-65 हजार रूपये के मध्य तक सीमित रहती है। लेकिन, दो साल के बाद आय महकना शुरू हो जाती है। पौधे की उम्र बढने के साथ उत्पादन बढ़ जाता है। दिसम्बर और जुलाई के माह में प्रति पौधा ज्यादा उत्पादन मिलता है। दो साल के पौधों से प्रति बीघा आय एक से सवा लाख रूपए प्रति बीघा तक पहुंच जाती है। जबकि, खर्च 22-25 हजार रूपए प्रति बीघा के मध्य आता है।

पौधो से भी आय

गुलाब की खेती में सफलता मिलने के बाद कृषि विज्ञान केन्द्र से पौध तैयार करने का प्रशिक्षण इस किसान ने लिया। गत वर्ष गुलाब की पौध तैयार कर विपणन किया। इससे 4 लाख रूपये की आय इस किसान को मिली है। गौरतलब है कि सिंचाई के लिए इस किसान के पास पहले कुआ था। लेकिन, अब ट्यूबवैल खुदवा लिया है। साथ ही, गुलाब की खेती के काम आने वाले कृषि यंत्रों की खरीद भी किसान ने की है।

12 बीघा में किनवा

गुलाब के साथ-साथ यह किसान किनवा की खेती से भी जुड़ा हुआ है। 12 बीघा क्षेत्र में इस वर्ष किनवा की फसल ली है। 5 क्विंटल प्रति बीघा का उत्पादन किसान को मिला है। लेकिन, किनवा की बिक्री में परेशानी आ रही है। किसान का कहना है कि सरकार मिनीकिट से इतर किनवा की खेती करने वाले किसानों से भी उत्पाद की खरीद सुनिश्चित करें।

उन्नत पशुपालन

पशुधन में मेरे पास 2 गाय और 6 भैंस है। प्रतिदिन 20-22 लीटर दुग्ध का उत्पादन मिल रहा है। दुग्ध का विपणन डेयरी को कर रहा हूॅ। इससे प्रतिदिन 300 रूपये की शुद्ध बचत हो रही है। पशुओं का प्रबंधन वैज्ञानिक तरीके से कर रहा हूँ। जरूरी होने पर कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौडगढ़ के वैज्ञानिको का मागदर्शन लेता हूँ ।

साभार हलधर टाइम्स। वर्ष 12। अंक 29। 22-28 मई 2017